सुपर एजेण्ट-

शूटकाण्ड

और मौत का बादशाह

Arjum m Varum present

MORE COMICS @ HTTP://COMICSPITARA.BLOGSPOT.COM/

कुकबाष्ड और मौत का बादशाह

• लेखक : बिमल चटर्जी.

•चित्रांकन: शिशूल कॉमिक्स प्रा.लि.

एक बार कुकबाष्ड और मोटू को नाटक में काम करने का शौक चर्राया और उनकी बदकिस्मती से उस नाटक में किसी असली व्यक्ति का खून हो गया।

खून... खून...!

उन पर खून का इल्जाम लगा, लेकिन वे बच गये। तभी उन्हें एक सोने का सिक्का और किसी कांपती धरती के किंग का मिला।

जब कुकबाष्ड और मोटू ने खूनी की खोज-बीन आरम्भ की और कांपती धरती पर पहुंचने की कोशिश की तो उन पर विभिन्न ढंग से आक्रमण हुए।

धड़ाम!

धांय-धांय

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.blogspot.com/

परन्तु सुपर कार की मदद से कुकबाण्ड आदि न केवल बच गये, बल्कि उन्होंने आक्रमणकारियों का भी सफाया कर दिया!

धड़ाम!

धड़ाम!

भड़ाम!

परन्तु कांपती धरती की ओर बढ़ते हुए आखिर वे सुपर कार समेत आक्रमणकारियों के हमले का शिकार होकर...

धड़ाम!

मिस्टर होल-डोल, बचाओ!

...नदी में जा ही गिरे!

छपाक!

हाय! आखिर हो ही गई राम-नाम सत्!

प्यारे दोस्तो, यहां तक की कहानी आप मनोज चित्रकथा के गत तीन अंकों "कुकबाण्ड और कांपती धरती के लोग," "कुकबाण्ड और सोने का सिक्का" और "कुकबाण्ड और राम-नाम सत् है" में पढ़ चुके हैं। अब आगे पढ़ें।

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

उधर कार धीरे-धीरे नदी के बस की ओर अग्रसर हो रही थी।

मिस्टर होल-डोल, तुम चुप क्यों हो? कार को बचाने की कोशिश क्यों नहीं करते।

मेरे भीतर पानी घुस गया है मास्टर, इस-लिए मैं मजबूर हूं। बचाव का कोई उपाय नहीं कर सकता।

गड़प... गड़प! ओह! अब शायद हमारी मौत निश्चित है।

गड़प... गड़प! घबराओ नहीं मोट्ट, सेफ्टी बेल्ट खोलो और गाड़ी से बाहर निकलने की कोशिश करो।

लेकिन इससे पहले कि वे अपने बचाव के लिये कोई चेष्टा कर पाते, इन लुटेरों ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया।

अरे, अब यह कौन-सी मुसीबत टपक पड़ी?

जल्दी से इन्हें बेहोश कर दो।

हम तो वैसे ही मर रहे हैं भाई। अब तुम हमें और मुसीबत में डालने के लिये कहां से टपक पड़े?

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

लेकिन—

खट!

खट!

आह!

उफ!

कूं...कूं...!

कुकबाज़, मोटू और मनमौजी के बेहोश होते ही उन्होंने झटपट उनके चेहरों पर गैस मास्क चढ़ा दिये।

शाबाश! अब इन्हें मोटर बोट पर ले चलो।

जी श्रीमान्!

और शावर, तुम इनकी कार को ज़ंजीर से मोटर बोट से बांधने में मेरी मदद करो।

जी श्रीमान्!

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

कुछ क्षणों में ही वह काफिला वहां से एक तरफ रवाना हो गया।

लगभग आधे घण्टे के सफर के पश्चात् मोटर बोट नदी के एक वीरान किनारे पर उभरी।

चलो, जल्दी से कैदियों को उनमें से एक हैलीकॉप्टर के भीतर पहुंचाओ। हरिअप!

और सर, इनकी कार!

उसे दूसरे हैलीकॉप्टर वाले स्वयं ले जायेंगे। तुम लोग अपना काम करो।

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

उन गोलाखोरों ने क्रुकबाण्ड, मोद और मनमौजी को बोट से उगया और कंधो पर लादकर...

एक हैलीकॉप्टर के भीतर पहुंचा दिया...

...फिर शीघ्र ही वह हैलीकॉप्टर एक दिशा में उड़ान भर गया।

तब दूसरा हैलीकॉप्टर उड़ान भरता हुआ बोट के ठीक ऊपर पहुंचा और नीचे खड़े लोगो ने सुपर कार को उससे बांध दिया और अगले पल—

हम जा रहे हैं!

ओ.के.! जाओ।

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

फिर वह हैलीकॉप्टर शीकार को लेकर उस दिशा में बढ़ चला, जिस दिशा में पहला हैलीकॉप्टर गया था।

लगभग एक घण्टे की उड़ान के पश्चात् दोनों हैलीकॉप्टर एक घाटी के ऊपर पहुंचे।

पायलट, नीचे सिग्नल दो, ताकि हम सुरक्षित नीचे उतर सकें।

ओ के सर!

उस घाटी में एक छोटा-सा किन्तु सुन्दर नगर बसा हुआ था, जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था।

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

दोनों हैलीकॉप्टर उसी नगर में एक स्थान पर बने मजबूत व आधुनिक किस्म के हैलीपेड पर उतर गये। उनके उतरते ही बहुत से गोरे सशस्त्र सैनिकों ने उन्हें अपने घेरे में ले लिया।

मेरे हैलीकॉप्टर में दो कैदी और उनका एक कुत्ता है। तीनों को हैडक्वार्टर में पहुंचा दो।

यस सर!

और सुनो, उस सुपर कार को सर्विस स्टेशन पहुंचा दो, ताकि हमारे इंजीनियर व टेक्नीशियन उसके पुर्जे-पुर्जे अलग करके उसकी मशीनरी के बारे में पूरी-पूरी जानकारी हासिल कर सकें।

राईट सर!

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

और फिर आदेशानुसार कुकबाण्ड व मोद आदि को हैडक्वार्टर में पहुंचा दिया गया...

...तथा सुपर कार को सर्विस स्टेशन में। जहां मैकेनिक और इंजीनियरों ने उसे कई हिस्सों में विभक्त कर दिया।

हा-हा-हा! अब यह सुपर कार अपने मास्टर की कोई मदद नहीं कर पायेगी।

हा-हा-हा!

खड़-खड़ खटक।

उधर जब हैडक्वार्टर में कुकबाण्ड को होश आया—

आई! यह मैं कौन-सी दुनिया में आ गया?

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.blogspot.com/

शीघ्र ही क्रुकबाण्ड को सबकुछ ध्यान आ गया।

ओह! उन रहस्यमय गोताखोरों ने हमें बेहोश कर दिया था।

लेकिन मोटू और मनमौजी भी तो मेरे साथ थे। वे कहां गये?

ओह! वे रहे।

मोटू, अबे मोटू के बच्चे! होश में आ। देख, हम किस चूहेदानी में आ फंसे हैं।

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

आह! मैं कहां हूं?

जहन्नुम में!

आई! तो क्या मैं मर गया?

अबे मूर्ख, अगर अभी नहीं मरा है तो भी जल्दी ही मर जायेगा, क्योंकि इस समय हम अज्ञात दुश्मनों की कैद में हैं।

ओह बाण्ड भइया! तुम भी हो?

...ी मजगोजी भी होश में आकर उनके पास आकर बैठ गया।

बाण्ड भइया, क्या तुम्हें मालूम है कि इस समय हम कहां हैं?

अबे, अगर यही मालूम होता तो अब तक मैं इस कैदखाने से फरार न हो चुका होता। वैसे मेरा विचार है कि इस समय हम कांपती धरती पर ही कहीं हैं।

???

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

मोटू चारों ओर देखता हुआ बोला—

बाण्ड भइआ, अब हम यहां से निकलेंगे कैसे ? यहां न तो कोई खिड़की है, न रोशनदान।

यही तो परेशानी है। मुझे तो यह भी मालूम नहीं पड़ रहा कि इस समय रात है या दिन। कम्बख्त घड़ी भी बंद हो चुकी है।

तभी—

भौं- भौं- भौं !

शायद कोई आ रहा है। सावधान हो जाओ। यदि मौका मिला तो हमें निकल भागने की कोशिश करनी है। समझ गये !

हां!

शीघ्र ही दरवाजा खुला।

ऐ, चली हमारे साथ, लेकिन खबरदार, कोई शरारत करने की कोशिश मत करना, वरना वक्त से पहले ही मार दिये जाओगे।

अबे यार, धमकी मत दे। मौत के मुंह में तो हम वैसे ही खड़े हैं...

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

ओफ्फ ! बेहद गर्क हो इनका। यह सबसे बुरा हुआ।

हा-हा-हा! अब तुम्हारी सुपर कार भी तुम्हारी कोई मदद नहीं कर पायेगी।

बड़े भाई, कम से कम यह तो और बता दो कि तुम हमें लिये कहां जा रहे हो।

अपने कमाण्डर के पास।

तभी बाण्ड का ध्यान आस-पास से गुजरते स्त्री-पुरुषों की ओर गया।

ओह ! शायद ये छोटे-छोटे बौने इसी देश के नागरिक हैं और काफी भयभीत से लग रहे हैं।

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

क्यों भाई, क्या ये काले छोटे-छोटे लोग इसी देश के वासी हैं?

हां, लेकिन अब ये हमारे गुलाम हैं और निर्देशानुसार ही अपनी जिंदगी बिताते हैं।

और इनका राजा!

वह इस समय हमारी कैद में है...

... सुनो जासूस छोकरे, अब जो कुछ पूछना हो कमाण्डर से ही पूछना। मुझसे अब एक भी प्रश्न किया तो मैं तुम्हें इसी समय गोली मार दूंगा।

तभी कुकबाण्ड कुछ एहसास कर उछल पड़ा।

अरे!

क्या हुआ?

यह धरती में कम्पन कैसा हो रहा है?

इस घाटी के चारों ओर कई ज्वालामुखी पर्वत हैं, जिनके मध्य अक्सर विस्फोट होते रहते हैं। उन्हीं विस्फोटों से यहां की धरती हमेशा कांपती रहती है...

... परन्तु ऊपर से वे ज्वालामुखी पर्वत वर्षों से शांत हैं, यही कारण है कि यह घाटी अभी तक सुरक्षित है।

ओह! अब समझा कि इस देश का नाम कांपती धरती क्यों पड़ा?

ARJUN N VARUN PRESENTS
BY
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/













ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

बस कमाण्डर, इतना और बता दीजिये कि आप यह सोने के अण्डे अपने लिये छील रहे हैं या अपने देश के लिये।

हा-हा-हा!

मैं समझ गया चालाक छोकरे कि इस प्रश्न के पीछे तुम्हारा क्या अभिप्राय छिपा हुआ है...

...लेकिन फिर भी मैं तुम्हें निराश नहीं करूंगा...

...सुनो, यह काम मैं सिर्फ अपने लिये कर रहा हूं। मैं अपने देश की सेना का एक भगोड़ा अपराधी हूं...

...देशद्रोह के अपराध में मेरा कोर्ट मार्शल हो चुका था और मुझे फांसी की सजा दी जानी थी...

...लेकिन मृत्यु-दण्ड से एक दिन पहले मैं कैदखाने से भाग निकला...

बचकर न जाने पाये। शूट हिम।

धांय-धांय!

...संयोग से मैं बचता-बचाता उस स्थान पर पहुंच गया, जहां एक सैनिक विमान खड़ा था।

वाह! बन गया काम।

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

...मैं वह विमान लेकर भाग निकला और कैदखाने के रक्षक व अधिकारी एक-दूसरे का मुंह देखते रह गये...

मैं लगातार आठ घण्टे तक उड़ान भरता रहा। जब विमान का पेट्रोल समाप्त हुआ तो मैं ठीक इस घाटी के ऊपर था...

...मजबूरन मुझे विमान को इसी घाटी में उतारना पड़ा, लेकिन जिस स्थान पर मैंने विमान उतारा, वहां सोना ही सोना हीरे-पत्थरों की तरह पड़ा देख मैं भौचक्का-सा रह गया...

ओ माई गॉड! गोल्ड!

...और जब मैंने इस घाटी के बारे में खोजबीन की तो यहां एक पूरा नगर बसा पाया। यहां के छोटे-छोटे लोग बहुत ही नम्र, शान्तिप्रिय और दयालु थे...

...वे मुझे अपने राजा प्रोफेसर जे. एक्स. के पास ले गये, जो कि एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक होते हुए भी बड़ा नरम हृदय व मिलनसार व्यक्ति था। कुछ ही दिनों में मैंने उससे प्रगाढ़ मित्रता कर ली और उसकी प्रयोगशाला में उसके साथ रहकर उसके नये-नये प्रयोगों में उसका हाथ बंटाने लगा...

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

फिर मैंने एक भयानक योजना तैयार
/ प्रोफेसर जे. एक्स. की मदद से मैं अपने
के अन्य मुजरिमों को लालच देकर यहां
जित करने लगा / जबकि प्रोफेसर मेरी
जना से पूर्णतया नावाकिफ था...

...और जिस दिन मैंने यह देखा कि मैंने अपने आदमियों की एक अच्छी-खासी फौज एकत्रित कर ली है, मैं अपनी मनमानी पर उतर आया, और यहां के लोगों से गुलामों की तरह सोने के पहाड़ कटवाकर सोना एकत्रित करने लगा..

ो कोई भी मेरा हुक्म मानने से
र करता, मैं उसे बेरहमी से मौत
ाट उतरवा देता...

...इस तरह मैं यहां के वासियों के लिये मौत का बादशाह बन बैठा...

हा-हा-हा! भून डालो मेरे इन नन्हे दुश्मनों को।

नहीं-नहीं, हमें क्षमाकर दो मौत के बादशाह। हम तुम्हारा हर कहा मानेंगे।

...लेकिन रहम करना तो मैंने सीखा ही नहीं था...

हा-हा-हा!

धांय-धांय!

आह!

आह!

उई... ई...!

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

...पहले-पहल तो प्रोफेसर विवशता से अपनी प्रजा पर मेरा जुल्मो-सितम देखता रहा, लेकिन फिर वह भी मुझसे विद्रोह पर उतारू हो गया...

तुम्हें मेरा देश छोड़कर जाना ही होगा कमाण्डर! अब मैं तुम्हारा अत्याचार और नहीं देख सकता।

खामोश चूहे के बच्चे!

साथियो, ले जाओ इसे और कैदखाने में डाल दो। फिलहाल इसे मारना ठीक नहीं होगा, क्योंकि यह एक महान् वैज्ञानिक है और इसके चमत्कारी आविष्कार भविष्य में हमारे बड़े काम आयेंगे।

...इस तरह प्रोफेसर को कैदखाने में डाल मैंने पूरे देश पर अपना कब्जा कर लिया...

...लेकिन कुछ साल बाद मुझे मालूम हुआ कि प्रोफेसर अपना एक आदमी हिन्दुस्तान में तुम्हारे पास मदद मांगने के लिए भेज चुका है...

ऐं ऐं ऐं

!!!

...मैंने तुरन्त अपने आदमियों को सतर्क कर दिया और...!

बस-बस प्यारे [illegible] की कहानी तुम न बल्कि मेरा चेला मनमौजी तुम्हें बतायेगा।

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.blogspot.com/

चलो प्यारे चेले, आगे की कहानी सुना दो अपने कमाण्डर साहब को!

गुर्र... र्र... र्र!

कुकबाण्ड के कहने भर की देर थी, मनमौजी ने हवा में एक ऊंची और लम्बी छलांग लगाई...

गुर...र्र...गुर्र...!

और इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता—

हाय! मर गया!

भौं-भौं-भौं!

सबका ध्यान उस तरफ बंटते ही—

धड़ाक्

कड़ाक!

उफ!

आह!

मोटू भाई, तुम भी शुरू कर दो लड़ाई!

अभी ली बाण्ड भइया!

भौं-भौं-भौं!

अरे, कोई इसे गोली मारो!

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

कुकबाण्ड ने एक क्षण में ही वहां का माहौल बदल दिया था।

धिशुम्!

धड़ाक्!

हाय! मर गया।

उफ्!

लेकिन वह लड़ाई ज्यादा देर तक नहीं चली और कमाण्डर के आदमियों ने शीघ्र ही बाण्ड, मोट्ट और मनमौजी को अपनी गनों की जद में ले लिया।

उल्लू के पट्ठे, तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम मुझे एक कुत्ते से कटवाओगे...

...मेरा विचार पहले तो यह था कि तुम्हें जिंदा रखकर तुमसे भी सीना निकलवाऊंगा, लेकिन अब नहीं...

...अब मैं तुम्हें ऐसी मौत मारूंगा कि तुम्हारी रूह अगला जन्म लेते हुये भी कांपेगी...

... सैनिको, ले जाओ इन्हें और प्रोफेसर के साथ ही कैद कर दो, ताकि मरने से पहले ये प्रोफेसर से भी आखरी बार गले मिल लें...

...कल हम मौत के मैदान में शाही जश्न मनायेंगे और उसी जश्न में इन तीनों को अपने भूखे टाइगर के हवाले कर देंगे, ताकि वह भी शानदार दावत उड़ा सके।

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

जाओ, ले जाओ इन्हें मेरी नजरों के सामने से।

जल्दी ही क्रुकबाण्ड, मोटू व मनमौजी को प्रोफेसर जे. एक्स. वाले कैदखाने में डाल दिया गया।

कौन ?

ओह! कौन? प्रोफेसर अंकल जे. एक्स.!

!!!

तुम कौन हो भाई ?

मैं क्रुकबाण्ड हूं प्रोफेसर अंकल।

क्रुकबाण्ड का परिचय जानकर प्रोफेसर का चेहरा एक क्षण को प्रसन्नता से खिला, लेकिन दूसरे ही क्षण फिर मुरझा गया।

आहा! तुम!

ल... लेकिन इस दशा में ?

लम्बी कहानी है प्रोफेसर अंकल!

फिर क्रुकबाण्ड ने प्रोफेसर को शुरू से लेकर अन्त तक की सारी बात बता दी।

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

सबकुछ सुनकर—

मुझे दुःख है कुकबाष्प कि मेरे कारण तुम भी मुसीबत में फंस गये!

आप चिन्ता न करें प्रोफेसर अंकल! जो होना था, वह हो गया और जो आगे होगा, उससे निपटने की कोशिश करेंगे।

फिर उनके मध्य मौत का-सा सन्नाटा व्याप्त हो गया।

अगले दिन सुबह के लगभग दस बजे कुकबाष्प, मोटू और मनमौजी को सैलानियों से घिरे एक मैदान में ले जाया गया, जिसके चारों तरफ मोटे मुजस्सिम बेंचे थे और उन्हीं के मध्य कमाण्डर बेकोर्ड भी सिंहासन पर बैठा था।

हा-हा-हा!

हो-हो-हो!

ही-ही-ही

तभी—

टाइगर को छोड़ा जाये।

अरे बाप रे!

तत्क्षण एक व्यक्ति ने पिंजरे में बंद खूंखार चीते को आजाद कर दिया।

हाय! अब हमें कोई नहीं बचा सकेगा।

गुर्र-र्र-गुर्र!

बाप्प भइया, बचाओ!

अबे मोटू के बच्चे परे हट, वरना वह हम दोनों को एक साथ चीर-फाड़ कर रख देगा।

कू-कू-कू

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

गुर्र-र्र-र्र!

मेरे हटने से क्या होगा बाण्ड भइया! वैसे भी तो वह हमें फाड़कर खा जायेगा।

जरूर खा जायेगा, लेकिन पहले वह तुझे ही खायेगा। आखिर भगवान् की दया से तू मोटा-ताजा जो है।

अरे बाप रे!

तभी चीते ने कुकबाण्ड पर छलांग लगाई—

गुर्र-र्र-र्र-

बचाओ sss!

हा-हा-हा!

शाप में मि० होल-डोल पानी सूख जाने के स्थिति में आ गया था।

ओह! मास्टर के प्राण ~~खतरे में हैं~~। मुझे तुरन्त उनकी मदद के लिये पहुंचना होगा, वरना...

अगले ही पल—

व्हील नम्बर वन, टू, थ्री एण्ड फोर, क्या मेरी आवाज तुम तक पहुंच रही है।

यस मिस्टर होल-डोल!

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

गुड!

एटेंशन बैक बॉडी, क्या तुम तक भी मेरी आवाज पहुंच रही है?

यस मिस्टर हील-डील, क्या आदेश है?

हमें तुरन्त अपने मास्टर की मदद के लिए पहुंचना है। अतः तुम सब एक्शन में आ जाओ। जो भी हमारा मार्ग रोकने की कोशिश करे, उसे मार्ग से हटा दो।

ओ. के. मिस्टर हील-डील।

अगले ही पल—

खट्-खट्-खट्

खट्-खट्-खट्

फट्-फट्-

सुपर कार के अलग-अलग हुए हिस्सों को यकायक ही हरकत में आते देख, वहां पहरा दे रहे सैनिक चकित हो उठे।

हैं!

अरे बाप रे!

भागो!

ठक-ठक

फट्-फट्-फट्

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

अरे मूर्खों, भागते कहां हो? यह एक गाड़ी के पार्ट्स हैं, कोई भूत-प्रेत नहीं। फायर करके बेकार कर दो इन्हें।

ठक-ठक

फट्-फट्-फटाक्

न सैनिकों को होश आया और—

धांय-धांय

ठक्-ठक्-ठक्

तड़-तड़-तड़

फट्-फट्-फटाक्

तभी होल-डोल ने आदेश दिया—

अटैक!

डोल का आदेश मिलते ही—

झटाक!

फटाक

य!
गया।

ओफ्फ!

कड़ाक्

आ-ई-ई-!

सड़ाक्

हाय मेरी मां!

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

ढिशुम!

आ-ई-ई-ई!

बचाओSSS!

शीघ्र ही—

मार्ग साफ है। जल्दी करो और मुझसे जुड़ जाओ।

यस मिस्टर होल-डोल!

और पलक झपकते ही सुपर कार अपने आप में पूर्ण खड़ी थी।

अब चिन्ता की कोई बात नहीं। आगे आने वाले खतरे से मैं खुद निपट लूंगा।

फिर सुपर कार हवा में तैरती हुई वर्कशाप से बाहर निकलने वाले मार्ग पर बढ़ी। मार्ग में कई स्थानों पर सुरक्षाकर्मियों ने उसे रोकना चाहा...

फायर!

धांय-धांय

तड़-तड़-तड़

... लेकिन सुपर कार संचालित करने वाले रोबोट कम्प्यूटर मिस्टर होल-डोल ने भयंकर फायरिंग करके व राकेट छोड़कर सबको नष्ट व तबाह कर दिया।

तड़-तड़-तड़

आह!

उफ!

शू-शू-शू

धड़ाम

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

फिर—

उधर मैदान में—

बाण्ड भइया!

भौं-भौं-भौं!

इससे पहले कि चीता कुकबाण्ड के ऊपर गिरकर उसे दबोच पाता, आकाश से सहसा ही आने वाली एक जंजीर में लगे हुक ने उसे जकड़ लिया और ऊपर की तरफ उठा लिया।

गुर्-र्-र्!

हैं!

अरे!

आहा!

ओह!

सबकी निगाह ऊपर उठी—

आहा! सुपर कार!

हुर्रे!

कू-कू-कू!

अरे! यह सुपर कार अपने आप ठीक होकर यहां कैसे पहुंच गई?

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/

अरे नमकहरामो, खड़े-खड़े क्या देख रहे हो। गोली-बारी करके कार को नष्ट कर दो।

तभी कार से निकली दूसरी जंजीर ने उसे भी जकड़ ऊपर उठा लिया।

आ-ई-ई-ई। ब...बचाओ!

इसी के साथ सुपर कार से भयानक बमबारी आरम्भ हो गई

धुड़म

धड़ाम

आह!

उफ!

मोटू, मैदान से बाहर भागो, वरना हम भी बमबारी की चपेट में आ जायेंगे।

धड़ाम

धुड़म

आह!

आ-ई-ई-ई-!

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.blogspot.com/

झपकते ही वहां चारों तरफ
ही आग दिखाई देने लगी। एक भी चीख
उस भयानक बम-बारी से जिन्दा
चा और तब मिस्टर होल-डोल ने चीनी
कमाण्डर को भी जंजीरों से मुक्त
या।

आ-ई-ई-ई-!
बचाओ ऽऽऽ!

गुर्र-गुर्र-गड़ाप!

नीचे धधकती आग की लपटों ने उन दोनों को भी लील लिया।

ऊपर कार शान से धरती पर उतरी—

बहुत-बहुत धन्यवाद मिस्टर होल-डोल! आज मुझे वास्तव में अपने दिमाग पर गर्व हो रहा है।

लेकिन मास्टर, यह सारा महान काम तो मैंने अपने दिमाग से अंजाम दिया है।

अरे भाई, तुम्हें बनाने वाला भी तो आखिर मैं ही हूं।

हा-हा-हा! आप वास्तव में महान इंसान हैं मास्टर!

बाद कुकबाण्ड ने सबसे पहले प्रोफेसर जे.एक्स. को कैद से मुक्त कराया। जान-सुनकर प्रोफेसर ने उसे भाव-विह्वल होकर हृदय से लगा लिया।

मैं तुम्हें कभी नहीं भुला पाऊंगा मास्टर कुकबाण्ड! तुमने मुझ पर और मेरे देशवासियों पर बड़ा एहसान किया है।

अब आपको क्या बताऊं प्रोफेसर अंकल! यह एहसान आप पर मैंने नहीं, बल्कि मिस्टर होलडोल ने किया है...

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.blogspot.com/

... और आप पर ही क्या, उसने मेरी, मोटू और मन-मौजी की जान बचाकर हम पर भी एहसान किया है।

फिर कुकबाख की मदद से प्रोफेसर ने तमाम गोरे अपराधियों को मौत के घाट उतार दिया।

जब वहां के लोगों को यह पता चला कि तमाम गोरे लोग मारे गये हैं और वे उनकी गुलामी से आजाद हो चुके हैं तो वे खुशी से झूम उठे।

और जब कई दिनों तक कुकबाख, मोटू और मनमौजी ने प्रोफेसर जे.एक्स. की मेहमानी करने के बाद अपने देश की ओर प्रस्थान किया तो कांपली धरती के तमाम वासियों की आंखों में आंसू छलछला आये।

मैं और मेरे देशवासी तुम्हें कभी नहीं भुला पायेंगे ऐ महान, नेक दिल व बहादुर हिन्दुस्तानियो।

ARJUN N VARUN PRESENTS
more comics @ HTTP://comicspitara.BLOGSPOT.com/